Dr.pragya kumari
Asst.prof.
Dept.of psychology
H.D.Jain college Ara

Scanned with CamScanner

State-dependent memory

से तात्पर्य इस बात से होता है कि LTM से किसी सूचना की पुनः प्राप्ति उस परिस्थिति में आसान होती है जब recall करते समय जो व्यक्ति की आन्तरिक शारीरिक अवस्था होती है वह ठीक वैसी ही होती है जैसा कि उस सूचना को LTM में संचित करते समय था। जैसे, यदि किसी गद्यांश को Jolly mood में रहकर याद किया गया है, तो इसका recall खुशी की मनोदशा में अन्य मनोदशा की तुलना में अधिक होगा। Eich ने इस तथ्य की संपुष्टि अपने प्रयोगात्मक अध्ययन से किया है।

Bower, 1981 ने भी अपने अध्ययन में hypnosis द्वारा उत्पन्न सांवेगिक अवस्थाओं के लिए State dependent memory का प्रभाव होते पाया है। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया है कि जब सम्मोहित अवस्था में प्रयोज्यों में खुशी की मनोदशा उत्पन्न कर दी गयी तो वे उन शब्दों की सूची का उत्तम recall नहीं कर पाये जिसे वे सम्मोहन के पहले 'उदासी' की अवस्था उत्पन्न

में सीखे थे। उसी तरह से जब सम्मोहित अवस्था में उनमें उदासी की अवस्था उत्पन्न कर दी गयी तो वे उन शब्दों की सूची का उत्तम recall नहीं कर पाये जिसे वे सम्मोहन के पहले खुशी की अवस्था में सीखे थे।

इन्होंने अपने अध्ययन में यह भी देखा की जब सम्मोहन में उत्पन्न सांवेगिक अवस्था (खुशी या उदासी) शब्दों को सीखते समय की अवस्था के अनुरूप या समान था, तब recall की मात्रा अधिक उत्तम हुयी।

इन अध्ययनों में यह देखा गया कि State dependent cues का प्रभाव केवल recall पर पड़ता है Recognetion पर नहीं।

Tulving & Thomson, 1973 द्वारा प्रतिपादित "कूट संकेतीकरण विशिष्टता नियम" के द्वारा हमें यह पता चलता है कि इन दोनों तरह के Retrieval cues में से किसका उपयोग अधिक लाभप्रद होता है। इन नियम द्वारा यह पता चलता है

कि LTM मे सूचनाओं को प्रवेश पाते समय जो संकेत उन्हीं संकेतों द्वारा कूट लेखन होता है सिर्फ पुनः प्राप्ति में बाद में सूचनाओं की यदि किसी सूचनाओं को सीखते समय अर्थात मदद मिलती है। जैसे, LTM में संचित करते समय भौतिक वातावरण के कुछ पहलुओं को संकेत के रूप में कूट लेखन किया गया तो वही संकेत बाद में उत्तम एवं लाभप्रद पुनः प्राप्ति संकेत साबित होंगे।

उसी तरह से किसी सूचना को सीखते समय यदि व्यक्ति की आंतरिक अवस्था के कुछ पहलुओं को संकेत के रूप में कूट लेखन किया गया तो वही संकेत बाद में उत्तम एवं लाभप्रद पुनः प्राप्ति संकेत साबित होंगे।

स्पष्ट हुआ कि LTM से retrieval का स्वरूप STM से retrieval के स्वरूप से भिन्न एवं जटिल है।

=